कक्षा-छठी (प्रथम भाषा)

प्रार्थना

कविता की सप्रसंग व्याख्या

ईश्वर तू है सब का स्वामी
क्षमा सिन्धु तू अन्तर्यामी,
तेरे गुण पाएँ हम बच्चे,
काम करें सब अच्छे-अच्छे।

शब्दार्थ : सिन्धु - सागर अन्तर्यामी - मन की बात समझने वाला

प्रसंग :- यह अवतरण डॉ.धर्मपाल मैनी जी द्वारा रचित 'प्रार्थना' कविता से अवतरित है। इसमें बच्चे ईश्वर से हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहते हैं-

सरलार्थ :- हे ईश्वर ! तू हम सब का स्वामी है। तू क्षमाशील है। तू हमारी गलतियाँ माफ़ करने वाला है, इसलिए तू क्षमा का सागर है और सभी के मन की बातों को जानने-समझने वाला है। हे ईश्वर ! हमारी यही अभिलाषा है कि हम सब बच्चे तुम्हारे गुणों को अपनाकर दुनिया में अच्छे काम करें।

तू है ज्योति का आगार
सत्य-ज्ञान दया भंडार,
अमित आलोक तेरा हम पाएँ,
मिल-जुल सब तेरे गुण गाएँ।

शब्दार्थ :-ज्योति-प्रकाश आगार-खज़ाना अमित-बहुत आलोक - प्रकाश।

प्रसंग :- यह अवतरण डॉ. धर्मपाल मैनी जी द्वारा रचित 'प्रार्थना' कविता से अवतरित है। इसमें बच्चे ईश्वर से हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहते हैं

सरलार्थ:- हे ईश्वर ! तू प्रकाश का खज़ाना है। तुम सभी को सत्य-ज्ञान बाँटते हो और दया के खज़ाने हो। हम बच्चे तुम से बहुत सारा ज्ञानरूपी प्रकाश प्राप्त करें। हे ईश्वर ! हमारी यही अभिलाषा है कि हम सब मिलकर तेरे गुणों का गुणगान करें।

भगवन् हम बनें उदार,
तेज-तप संयम भंडार,
पापमय अंधकार भगाएँ,
पुण्यों का प्रकाश फैलाएँ।

शब्दार्थ- उदार - विशाल हृदय वाला संयम - मन को वश में रखना ।

प्रसंग :- यह अवतरण डॉ. धर्मपाल मैनी जी द्वारा रचित 'प्रार्थना' कविता से अवतरित है। इसमें बच्चे ईश्वर से हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहते हैं-

सरलार्थ :- हे ईश्वर ! हम सब बच्चे विशाल हृदय वाले बनें। हम तेजस्वी-तपस्वी और संयमी बनें। हम दुनिया से पापों से भरा अन्धेरा नष्ट करके पुण्यों अर्थात भले कामों का उजाला फैलाएँ।

तेजोमय तव रूप महान्,
दो हम को भक्ति का दान,
विद्या बुद्धि विवेक बढ़ा दो,
शीलवान और धीर बना दो।

शब्दार्थ :- **तेजोमय -** तेज से भरा **तव -** तुम्हारा **विवेक**- ज्ञान **शीलवान -** अच्छे चरित्र वाला

प्रसंग :- यह अवतरण डॉ. धर्मपाल मैनी जी द्वारा रचित 'प्रार्थना' कविता से अवतरित है। इसमें बच्चे ईश्वर से हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहते हैं-

सरलार्थ :- हे ईश्वर ! तुम्हारा रूप बड़ा तेजस्वी और महान है। तुम हमें अपनी भक्ति का दान दो। हमें विद्या प्रदान करो तथा हमारे भीतर बुद्धि व ज्ञान का

विस्तार करो । हमें सुशील और धीरज बना दो।

हम बच्चे हों तेरा रूप,

देश के रक्षक, वीर सपूत,

भगवन् हमरे ताप मिटा दो,

जीवन के अपराध भुला दो।

शब्दार्थ - ताप - कष्ट।

प्रसंग :- यह अवतरण डॉ. धर्मपाल मैनी जी द्वारा रचित 'प्रार्थना' कविता से अवतरित है। इसमें बच्चे ईश्वर से हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहते हैं-

सरलार्थ:- हे ईश्वर ! तुममें और हमारे में कोई भेद न रहे और हम बच्चे तुम्हारा ही रूप बन जाएँ। हम अपने देश की रक्षा करने वाले वीर सपूत बन जाएँ। हे ईश्वर ! हमारी यही अभिलाषा है कि तुम हमारे पापों-अपराधों को भुलाकर हमारे कष्टों को हर दीजिए।

ईश्वर, हम हों सदा निर्भीक,

सेवें गुरु-पितु-मातु सुप्रीत,

मिले कृपा तेरी का दान,

पाएँ नित्य-नूतन वरदान।

शब्दार्थ - निर्भीक - अभय, निडर **सप्रीत-** निष्ठा पूर्वक, प्यार से **नूतन** - नवीन

प्रसंग :- यह अवतरण डॉ. धर्मपाल मैनी जी द्वारा रचित 'प्रार्थना' कविता से अवतरित है। इसमें बच्चे ईश्वर से हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहते हैं-

सरलार्थ- हे ईश्वर ! हम सब बच्चे कभी भी किसी से न डरे अर्थात अभय हो जाएं । हम सब गुरुओं और माता-पिता की निष्ठापूर्वक, प्यार से सेवा करें। हे ईश्वर ! हमारी यही अभिलाषा है कि हमें तुमसे सदा नवीन वर मिलता रहे।

डॉ. सुनील बहल

सबके पालक दया निधान
प्रेम बढ़ाकर हरो अज्ञान,
पढ़-लिख कर सब बनें महान,
करें सदा जग का कल्याण।

शब्दार्थ :- निधान - भण्डार

प्रसंग :- यह अवतरण डॉ धर्मपाल मैनी जी की 'प्रार्थना' कविता से अवतरित है। इसमें बच्चे ईश्वर से हाथ जोड़कर निवेदन करते हुए कहते हैं-

सरलार्थ :- सारी सृष्टि का पालन करने वाले और दया करने वाले हे ईश्वर ! आप प्रेम बढ़ाकर हमारा अज्ञान दूर कीजिए । हे ईश्वर ! हमारी यही इच्छा है कि हम सब बच्चे पढ़-लिखकर महान बनें और सदैव दुनिया में भलाई के काम करें।

अभ्यास

'अ' लगाकर विपरीत शब्द लिखो-

शब्द	विपरीत शब्द
सत्य	असत्य
ज्ञान	अज्ञान
विद्या	अविद्या
संयम	असंयम
धीर	अधीर
विवेक	अविवेक

पर्यायवाची शब्द लिखो-

डॉ. सुनील बहल

ईश्वर	भगवान, परमात्मा
सिन्धु	सागर,समुद्र
भण्डार	खज़ाना,आकर
प्रकाश	रोशनी, उजाला
अन्धकार	अँधेरा, तम
वरदान	आशीर्वाद, वर
पिता	जनक , तात
गुरु	आचार्य, शिक्षक
माता	माँ , अम्बा

- **नए शब्द बनाओ :-**

शील + वान	शीलवान
पाप + मय	पापमय
दया + वान	दयावान
तेजो + मय	तेजोमय
गाड़ी + वान	गाड़ीवान
तपो + मय	तपोमय

- 'अन्तर्यामी' में 'र्' रेफ है। 'प्रेम' में 'र' पदेन है। 'कृपा' में ऋ की मात्रा 'ृ' लगी है। इन शब्दों में रेफ, पदेन और 'ऋ' की मात्रा पहचान कर लिखो-

प्रकाश	पदेन 'र'
निर्भीक	रेफ 'र्'
सुप्रीत	पदेन 'र'
कृपा	ऋ की मात्रा
प्रार्थना	पदेन 'र' (प्रा) , रेफ 'र्'(र्थ)

संयुक्त अक्षर से नए शब्द बनाओ-

उत्तर :- **क् + ष = क्ष - (रक्षक, रक्षा, क्षत्रिय)**

ज् + ञ = ज्ञ - (ज्ञान, ज्ञानी,विज्ञान)

त् + र = त्र - (मात्रा, पुत्र, मित्र)

विचार-बोध

1. प्रभु के लिए कविता में कौन-कौन से शब्द प्रयोग हुए हैं ?

उत्तर- प्रभु के लिए कविता में ईश्वर, स्वामी, क्षमा सिन्धु, भगवन्, अन्तर्यामी, पालक, ज्योति, दया-निधान आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

2. बच्चे प्रभु से क्या-क्या माँग रहे हैं ?

उत्तर :–बच्चे प्रभु से अच्छे कर्म करने, ज्ञान का प्रकाश, उदारता, संयम , भक्ति, विवेकशीलता, वीरता, निर्भीकता आदि गुण माँग रहे हैं।

3. कवि ने किसका प्रकाश फैलाने की प्रार्थना की है ?

उत्तर :- इस कविता में कवि ने पुण्यों का प्रकाश फैलाने की प्रार्थना की है।

4. कविता में किन-किन की सेवा करने की बात कही गयी है ?

उत्तर :- इस कविता में गुरुओं और माता-पिता की सेवा करने की बात कही गयी है।

5.प्रभु के कौन-कौन से गुण आपको प्रभावित करते हैं ?

उत्तर :- प्रभु के क्षमाशीलता, उदारता , अन्तर्यामी , सत्यवान, तेजवान और दया के भण्डार जैसे गुण हमें प्रभावित करते हैं।

तैयार व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)

असिस्टेंट डायरेक्टर (एस.सी.ई.आर.टी.)

व स्टेट रिसोर्स पर्सन

(हिंदी और पंजाबी)